

अन्तर्राष्ट्रीय ऑन लाइन संगोष्ठी



संरक्षक
प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी
कुलपति
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय



डॉ. मुकुल कानितकर
राष्ट्रीय संगठन मंत्री
भारतीय शिक्षण मण्डल



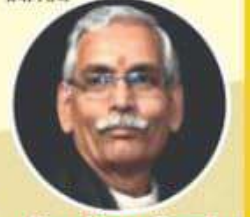
डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय
राष्ट्रीय संगठन सचिव
भारतीय इतिहास संकलन योजना
दिल्ली



प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री
कुलपति
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय



प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा
अध्यक्ष
उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग
प्रयागराज



प्रो. बलदेव भाई शर्मा
कुलपति
कुशाभाऊ ठकुरे संचार एवं
पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर



प्रो. रजनीश शुक्ला
कुलपति
महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय
हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा



प्रो. मोहन के. गौतम
लिडेन विश्वविद्यालय, नीदरलैंड्स



प्रो. कपिल देव मिश्र
कुलपति
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर



प्रो. कुमार रत्नम
सदस्य सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली



प्रो. सी.डी. सिंह
पूर्व कुलपति,
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक



प्रो. रहमान अली
सदस्य
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली



प्रो. अविका दत्त शर्मा
अधिष्ठाता,
मानविकी एवं समाजिक विज्ञान अध्ययनशाला



प्रो. नागेश दुबे
विभागाध्यक्ष



डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
आयोजन सचिव



डॉ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह
संयोजक

आयोजक

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सागर (म.प्र.), भारत

+ 91 9479983878

rps18.ballia@gmail.com
rpsingh@dhsgsu.edu.in

कोरोना संकट-काल में भारतीय संस्कृति की उपादेयता Relevance of Indian Culture in the Age of CORONA Crisis

2-3 जुलाई 2020

पंजीकरण लिंक

<https://docs.google.com/forms/d/1yVTifXrq880A97gGvOVGg6EGtfUplnLkT5WWtt2qt5A/edit>

अंतिम तिथि 30 जून 2020, 05:00 PM



GoToMeeting

प्रतिवेदन अंतर्राष्ट्रीय बेबीनार

‘कोरोना संकट काल में भारतीय संस्कृति की उपादेयता’ (02-03 जुलाई, 2020)

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बेबीनार के समापन दिवस पर दो तकनीकी सत्र सम्पन्न हुये। प्रथम तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता प्रो० कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री, कुलपति हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय रहे। आप ने इस बेबीनार के लिये चीन द्वारा फैलाये गये चीनी कीड़े और चीन की अमानवीय गतिविधियों का जिक्र करते हुये इसके निदान के लिये भारतीय संस्कृति एवं भारतीय सेना दोनों की सशक्त भूमिका का जिक्र किया। भारतीय संस्कृति में शरीर की स्वास्थ्य एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनाने के लिये संस्कृति में छिपे हुये मूल रहस्यों का उदाहरण सहित मन्त्र बतलाया।

द्वितीय वक्ता के रूप में प्रो० रजनीश शुक्ला, कुलपति महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा ने महत्वपूर्ण उद्बोधन देते हुये बतलाया की कोरोना जैसी महामारी दुनिया की देन है, जबकि इसका हल भारत में क्यों खोजा जा रहा है। आप ने इस महामारी को 1812, 1819-20 1855, 2017 में यूरोप स्पेन एवं अमेरिका में आने वाले आपदाओं से तुलना की। कोरोना महामारी के तीव्र प्रसार का कारण इसका हवाई जहाज से आवागमन बतलाया। जबकि इससे पहले आने वाली महामारियाँ का प्रवाह जहाज रेलगाड़ी, बस व आदमियों से होने के कारण कम क्षेत्र में प्रसारित हुआ। इस बीमारी में आपने डब्लू. एच. ओ. की भूमिका को संदिग्ध माना।

तृतीय वक्ता के रूप में प्रो० सी. डी. सिंह अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा ने भारतीय संस्कृति, भारतीय मूल्यों, भारतीय मर्यादाओं एवं कोरोना संकटकाल पर गहरा रेखाचित्र प्रस्तुत किया, जिसके अन्तर्गत त्याग की संस्कृति के अलावा दान की प्रवृत्ति प्रेम, क्षमा, भाईचारा, त्याग, धैर्य, शान्ति, ईमानदारी, उत्तरदायित्व एवं पंचमहायज्ञ जैसे भारतीय संस्कृति के सूत्रों का गहराई से विश्लेषण किया, साथ ही प्राचीनतम जीवन शैली को एक बार फिर से अपनाने का आह्वाहन किया।

इस अंतर्राष्ट्रीय बेबीनार के वक्ताओं में प्रो० रहमान अली, सदस्य भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने कोरोना संकट पर अपना विचार रखते हुये मानव

समुदाय को एक बार नये तरीके से सोचने, आगे बढ़ने और आत्मनिर्भर का अवसर प्रदान किया।

प्रो० कपिल देव मिश्र, कुलपति, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर ने कोरोना संकट के प्रभाव को समाजिक, आर्थिक, राजनितिक, धार्मिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से रेखांकित करते हुये भारतीय दृष्टि से प्राचीन शूत्रों जैसे स्नान करना, हाथ धोना, नमस्ते द्वारा अभिवादन पर बल दिया, साथ ही भारत की प्राचीन रक्षायुक्ति वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विश्व के देशों को पालन करने की ओर इंगित किया।

इस अंतर्राष्ट्रीय बेबीनार के अन्तिम वक्ता के रूप में प्रो. कुमार रत्नम्, सदस्य सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने संक्षिप्त में लेकिन सारगर्भित तरीके से भारत की ज्ञान परम्परा, राष्ट्र एवं राज्य की संकल्पना के साथ ही भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने में कलाकारों एवं चित्रकारों के समर्पण को जरूरी बतलाया। आज जिस तरह से कोरोना जैसी महामारी ने दुनिया की संस्कृति को अखंडित करने का प्रयास कर रही है वहीं भारत की समृद्ध संस्कृति इस महामारी से लड़ने के लिये मजबूती से सामना कर रही है।

इस अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार के समापन अवसर के पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. पी. तिवारी ने दो दिनों तक चलने वाले समस्त सम्माननीय वक्ताओं का एक—एक कर के उनके द्वारा दिये गये उद्बोधन की महत्ता को रेखांकित करते हुये समस्त प्रतिभागियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के लिये उपयोगी बतलाया। साथ ही मानविकी संकाय के समस्त विभागों को विद्यार्थियों के लिये रामजगारपरक रणनीति बनाने के लिये भविष्य में आवश्यकता पर बल दिया। अन्त में बेबीनार में मुख्य वक्ताओं, प्रतिभागियों, सहकर्मियों का आभार प्रदर्शन प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे द्वारा किया गया।

समापन सत्र के अवसर पर इस मुख्य रूप से प्रो. नागेश दुबे, विभागाध्यक्ष, डॉ. आर. पी. सिंह—संयोजक, डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव, आयोजन सचिव के अलावा डॉ. आशुतोष मिश्र डॉ. संजय शर्मा, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. गिरीश सिंह, डॉ. आर.बी. अनुरागी, डॉ. ज्ञानेश तिवारी, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. नीलू रावत, डॉ. अभिलाष सिंह एवं शारदा विश्वकर्मा ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।